मैं एक दोस्त के तौर पर भारत आया हूं

नई दिल्ली के पुराना किला में 3 मार्च 2006 को राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश का भाषण

धन्यवाद। विशिष्टगणों, नमस्ते। लॉरा और मुझे इस यात्रा का लंबे समय से इंतजार था और हमें बहुत खुशी है कि हम भारत आए।

हम आपके हार्दिक स्वागत के लिए कृतज्ञ हैं, आपके स्नेहपूर्ण आतिथ्य ने हमें छू लिया, इस जीवंत और दिलचस्प देश ने हमें अभिभूत कर दिया है। भारतीय लोगों से संवाद के इस अवसर के लिए मैं कृतज्ञ हूं। संसार के सबसे पुराने लोकतंत्र की शुभकामनाएं और आदर संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र तक पहुंचाते हुए मैं गौरव का अनुभव कर रहा हूं।

आज हम उस प्राचीन नगर के खंडहरों पर खड़े हैं जो हजारों साल पहले एक भारतीय राजशाही की राजधानी था। आज यह एक आधुनिक एशियाई नगर का एक हिस्सा है जो संसार के महान देशों में से एक की राजधानी है। जिस सभ्यता ने संसार को गणित देने में सहायता की, आज उसी के आधुनिकतम व्यवसाय हमें भविष्य की प्रौद्योगिकी दे रहे हैं। महान धर्मों के जन्मस्थल में आज विभिन्न धर्मों के सौ करोड़ अनुयायी स्वतंत्रता और शांति से साथ-साथ रह रहे हैं। 21वीं सदी में भारत में आने पर हम अतीत से प्रेरणा पाते हैं और भविष्य को देख पाते हैं।

21वीं सदी में भारत और अमेरिका सहज भागीदार हैं क्योंकि हम दोनों ही मानवीय स्वतंत्रता के पक्षधर हैं। कल मैं महात्मा गांधी के स्मारक पर गया और एक निर्भीक पुरूष के शांति प्रदान करनेवाले शब्द पढ़े। उनके उद्गार मेरे देश के लिए सुपरिचित हैं क्योंकि उन्होंने अमेरिकियों की एक पीढ़ी को नस्लीय भेदभाव के अन्याय पर विजय पाने को प्रेरित किया। वर्ष 1959 में जब मार्टिन लूथर किंग दिल्ली आए तो उन्होंने कहा, ''दूसरे देशों में मैं पर्यटक की तरह जाता हूं, लेकिन भारत में तीर्थयात्री की तरह आता हूं। मैं एक दोस्त के तौर पर भारत आया हूं।

संसार को बांटने वाली प्रतिद्वंद्विताओं ने भारत और अमेरिका को सालों तक दूर रखा। अब

फोटो: हेमंत भटनागर

स्थिति बदल गई है। हमारे लोगों के उत्थान में सक्षम अवसर और हमारी तमाम प्रगति को ध्वस्त कर सकनेवाली धमकियां हमारे दो महान लोकतंत्रों को पास-पास ला रही हैं । एक-दूसरे से आधे ग्लोब की दूरी पर स्थित भारत और अमेरिका आज इतने नजदीक हैं जितने नजदीक वे कभी नहीं रहे, और इन दो स्वतंत्र राष्ट्रों की साझोदारी में संसार को बदल देने की ताकत है।

अमेरिका और भारत की साझेदारी की गहरी मजबूत जडें हमारे साझे मूल्यों में हैं। हम दोनों देशों की स्थापना इस विश्वास पर आधारित है कि सब लोग बराबर हैं और उनके कुछ मूलभूत जन्मसिद्ध अधिकार हैं जिनमें बोलने की स्वतंत्रता, मिलने की स्वतंत्रता और धर्म के पालन की स्वतंत्रता शामिल हैं। हमारे लिखित संविधानों के माध्यम से ये स्वतंत्रताएं हमारे कानूनों में संरक्षित हैं और हमारे लोकतंत्रों के साझे संस्थान - निर्वाचित विधायिका, स्वतंत्र न्यायपालिका, वफादार राजनीतिक विपक्ष और जैसा कि मैंने भारत में जाना, जीवंत, स्वतंत्र प्रेस- इनकी रक्षा करते हैं।

हमारे देशों में लोकतंत्र सरकार चलाने के तरीके से कहीं बढ़कर हमारे राष्ट्रीय चरित्र का केंद्रीय लक्षण है। हम मानते हैं कि हर नागरिक को समान स्वतंत्रता और न्याय मिलना चाहिए क्योंकि हम

मानते हैं कि हर जिंदगी की गरिमा और मूल्य बराबर हैं। हम मानते हैं कि सभी समाजों को हर संस्कृति, जातीयता और धर्म के लोगों का स्वागत करना चाहिए और इस चिरस्थायी प्रतिबद्धता के कारण अमेरिका और भारत अपने इतिहास के संकटों से पार पा सके। हमें गर्व है कि हम विश्व के महान लोकतंत्रों के बीच साथ-साथ खड़े हैं ।

भारत और अमेरिका की साझेदारी लोकतंत्र से शुरू होती है, लेकिन उसके साथ ही खत्म नहीं होती। हमारे लोगों के बीच परिवार के प्रति समर्पण, सीखने की लगन, कलाओं के प्रति प्रेम तथा बहुत कुछ और साझा है। अमेरिका भारतीय मूल के बीस लाख से भी अधिक अमेरिकियों का घर है। पिछले बीस सालों में उनकी संख्या में तीन गुनी से ज्यादा वृद्धि हुई है। हर साल 500,000 भारतीय पर्यटकों और व्यवसायियों का अपने देश में स्वागत करते हुए हम खुद को सम्मानित अनुभव करते हैं। और हमारे विश्वविद्यालयों में मौजूद 80,000 भारतीय छात्रों से हम लाभान्वित होते हैं, यह विदेशी छात्रों का सबसे बड़ा समूह है। भारतीय मूल के बहुत-से लोगों का मेरे देश में प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, व्यवसाय और अन्य बहुत-से क्षेत्रों में जबर्दस्त योगदान रहा है।

विकास नरूला

राष्ट्रपति बुश 2 मार्च को नई दिल्ली में अमेरिकी दूतावास के रूजवेल्ट हाउस में दूतावास के भारतीय कर्मचारियों के साथ हाथ मिलाते हुए।

अमेरिकी कांग्रेस में मेरी मुलाकात लुइसियाना के प्रतिभाशाली भारतीय अमेरिकी प्रतिनिधि से होती है जो लुइसियाना का प्रतिनिधित्व करते हैं। मैंने उन भारतीय अमेरिकियों को जवाबी सलामी देता हूं जो अमेरिकी सशस्त्र सेनाओं के सदस्यों के तौर पर युद्ध में मेरे देश की रक्षा करते हैं। और तीन साल पहले एक अभागी सुबह हमें पता चला कि स्पेस शटल कोलंबिया पर सवार भारत में जन्मी एक बहादुर अंतरिक्ष यात्री नहीं रही। मैं जानता हूं कि भारत को डॉ. कल्पना चावला पर सदा गर्व रहेगा, उन पर अमेरिका को भी गर्व रहेगा।

अमेरिकी लोग भारत में अधिक समय बिता रहे हैं, और इसका कारण समझ पाना बहुत आसान है। भारत की संस्कृति, इतिहास और गतिविधियां समृद्ध हैं- दिल्ली के पर्वतों से लेकर वाराणसी के पवित्र स्थलों और बॉलीवुड के स्टूडियोज तक। आज मैं हैदराबाद में छात्रों, किसानों और उद्यमियों के दिलचस्प समूह से मिला- खुद को सानिया मिर्जा के गृहनगर में पाकर मैं रोमांचित था। अपने नागरिकों के लिए यात्रा और संपर्क के अवसरों को बढ़ाने के लिए अमेरिका हैदराबाद में एक वाणिज्य दूतावास खोलन का इच्छुक है। हम दिल्ली में भी एक नया, आधुनिकतम सुविधाओं से लैस अमेरिकन सेंटर बनाएंगे। ये कदम उठाकर हम अपने देशों, लोकतंत्रों के बीच संबंधों को मजबूत बनाते रहेंगे।

इस युवा सदी की शुरूआत में अमेरिका और भारतीय गणतंत्र दो महान उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मिलकर काम कर रहे हैं, पूरे संसार को समृद्धि और विकास के दायरे में लाना और मानवीय स्वतंत्रता के न्यायपूर्ण और पवित्र उद्देश्य को आगे बढ़ाकर अपने साझा शत्रुओं को हराना।

हमारा पहला महान उद्देश्य है समृद्धि और अवसरों को अपने देश के उन लाखों लोगों तक पहुंचाना जो उनसे अपरिचित हैं। भारत के लोकतंत्र को बनाए रखने वाली स्वतंत्रता आज भारत के अर्थतंत्र में नाटकीय बदलाव ला रही है। आपके देश में बुद्धिमत्तापूर्ण आर्थिक सुधारों और प्रौद्योगिकी की प्रगति के चलते अभूतपूर्व अवसर आ रहे हैं और आप उन अवसरों का लाभ उठा रहे हैं।

अमेरिका-भारत संयुक्त वक्तव्य

आपसी सहयोग

आर्थिक समृद्धि तथा व्यापार के लिए

व्यापार तथा निवेश के प्रोत्साहन के लिए द्विपक्षीय व्यावसायिक वातावरण बनाने के प्रयासों में तेजी लाने की सहमति इस प्रकार व्यक्त की गई:

- भारत-अमेरिका सी ई ओ फोरम की रिपोर्ट का स्वागत किया गया, द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को बढ़ाने के विचार से की गई संस्तुतियों पर सहमति और भारत-अमेरिका आर्थिक संवाद के प्रमुखों को सी ई ओ फोरम के साथ मिलकर तेजी से कार्रवाई करने का निर्देश।
- अमेरिका-भारत व्यापार नीति फोरम के प्रयासों की पुष्टि ताकि तीन वर्ष की अवधि में द्विपक्षीय व्यापार तथा निवेश की बाधाओं को कम करना, 2006 में एक उच्चस्तरीय सार्वजनिक तथा निजी निवेश शिखर सम्मेलन का आयोजन ताकि दोनों देशों के लिए लाभकारी व्यापार व निवेश की गति बढ़ सके।
- विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को प्रोत्साहित करने के प्रयासों को जारी रखना, इसमें आड़े आने वाली बाधाओं को दूर करना, विभिन्न मुद्दों पर आपसी विचार-विमर्श को बढ़ाना जिसमें माल के व्यापार तथा सेवाओं संबंधी शुल्क तथा गैर-शुल्क बाधाएं भी सम्मिलित हैं, और वित्तीय प्रणाली के अवैध उपयोग को रोकना।

कृषि में इन कदमों से सहयोग बढ़ाने पर बल:

- विश्वविद्यालयों, तकनीकी संस्थाओं तथा बिजनेस को आपस में जोड़ने के लिए तीन वर्ष की वित्तीय वचनबद्धता के साथ कृषि ज्ञान पहल का शुभारंभ जिससे कृषि शिक्षा व संयुक्त अनुसंधान और जैव प्रौद्योगिकी जैसी बड़ी परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जा सकेगा।
- कृषि क्षेत्र में द्विपक्षीय व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए इन समझौतों के तहत दोनों देशों की सहमति से कार्य योजना की पुष्टि: भारतीय आमों के लिए अमेरिकी बाजार की राह खोलना, भारत को अमेरिका के लिए भेजे जाने वाले उत्पादों को प्रमाणित करने का यह अधिकार कि भेजे जाने वाले भारतीय उत्पाद अमेरिका के कृषि विभाग (यू एस डी ए) के आर्गेनिक मानकों को पूरा करते हैं, और ताजा फल-सब्जियों, मुर्गी-पालन, डेयरी व बादाम के व्यापार को प्रभावित करने वाले वर्तमान कानूनों पर परिचर्चा के अवसर प्रदान करना।
- डब्लू टी ओ दोहा डवलपमेंट एजेंडा (डी.डी.ए.) को 2006 के अंत से पहले ही पूरा करने की वचनबद्धता की पुष्टि, और आपसी सहयोग से इसे सफल बनाने के लिए सहमति। □

अभूतपूर्व रूप से भारत के कुछ नया करने वाले लोगों ने बाहर की ओर देखना और वैश्विक अर्थतंत्र से जुड़ना शुरू किया है। आज भारत में लैंडलाइन फोन की अपेक्षा सैलफोन अधिक हैं। और बेंगलूर और बोस्टन के व्यवसायों में एक ई-मेल, एक टेक्स्ट मेसेज या वीडियो कांफ्रेंस के जरिये तुरंत संपर्क हो जाता है। भारतीय उद्यमियों ने संसारभर में फैले उपभोक्ताओं और व्यवसायों की मांगों को पूरा करने के लिए इन नये उपायों का इस्तेमाल किया है। इसका परिणाम है 1991 में आपके बाजारों के खुलने के बाद से आपके अर्थतंत्र का दोगुने से अधिक विस्तार। आपने अपने नागरिकों के जीवनस्तर को तेजी से बेहतर किया है। भारतीय मध्यवर्ग में अब 30 करोड़ लोग हैं, अमेरिका की जनसंख्या से कहीं ज्यादा।

अमेरिका भारत की आर्थिक प्रगति का स्वागत करता है क्योंकि हम समझते हैं कि दूसरे देशों के समृद्ध होने से हम सभी के लिए अवसर पैदा होते हैं। एक स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में हर नागरिक कुछ योगदान करता है। इसीलिए व्यापार समृद्धि और सामाजिक स्तर के बढ़ने का सशक्त साधन है। जब बाजारों को खोलकर गरीबों को अपनी प्रतिभा और योग्यता को विकसित करने का मौका दिया जाता है तो वे अपने परिवारों के लिए एक बेहतर जीवनशैली रच पाते हैं, संसार की समृद्धि में योगदान कर पाते हैं, और दूसरे देशों के सामान और सेवाएं प्राप्त कर पाते हैं। मुक्त और सही तरीके से व्यापार भारत के लिए, अमेरिका के लिए, संसार के लिए अच्छा है।

मेरे देश में कुछ लोगों का ध्यान भारत के साथ हमारे व्यापार संबंध के सिर्फ एक ही पक्ष पर केंद्रित रहता है-आउटसोर्सिंग। यह सच है कि कुछ कंपनियों के अपना काम दूसरे देशों में ले जाने के कारण कुछ अमेरिकियों की नौकरियां छूट गईं। यह याद रखना भी महत्वपूर्ण है कि जब किसी की नौकरी छूट जाती है तो उस पर और उसके परिवार पर बड़ा कठिन समय आ पड़ता है। कुछ लोग मानते हैं कि संरक्षणवादी नीतियों को अपनाकर हमारी अर्थव्यवस्था को संसार से अलग कर लेना इस समस्या का हल है। मैं इससे एकदम असहमत हूं। मेरी सरकार अपनी नौकरियां खो बैठे अमेरिकियों की नए कामों के लिए दक्षता जुटाने में मदद कर रही है। और हम लोग वैश्विक अर्थव्यवस्था के अवसरों को अपनाकर अपने-अपने देशों में लाखों-करोड़ों नई नौकरियां पैदा करने में मदद कर रहे हैं।

हम भारत में उन अवसरों को देख पा रहे हैं। इस देश में आने वाले अमेरिकी भारतीय उपभोक्ताओं को मैक्डॉनल्ड की मैक्करी मील्स, व्हर्लपूल से घरेलू उपकरण खरीदते देखेंगे। वे भारतीय व्यवसायों को अमेरिकी उत्पाद खरीदते पाएंगे जैसेकि एयर इंडिया ने हाल ही में बोइंग को 68 विमानों का ऑर्डर दिया। वे जनरल इलेक्ट्रिक, इंटेल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी अमेरिकी कंपनियों को भी यहां पाएंगे जो स्थानीय उपभोक्ताओं की जरूरतों को समझने और वह महत्वपूर्ण शोध करने के लिए भारत में हैं जो विश्व बाजार में उनके उत्पादों को अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बनाते हैं। अमेरिका संरक्षणवादियों के दबाव में आकर इन अवसरों को नहीं चूकनेवाला। हमारे दोनों देशों के कामगारों के वास्ते अमेरिका आत्मविश्वास के साथ व्यापार करेगा।

जिम्मेदारियां भारत पर भी हैं। भारत को विदेशी निवेश की सीमाएं बढ़ाते रहना होगा, अपने कायदे-कानूनों को अधिक पारदर्शी बनाना, शुल्कों को कम करते रहना और अपने बाजारों को अमेरिकी कृषि उत्पादों, औद्योगिक उत्पादों और सेवाओं के लिए खोलना होगा। हम यह भी आशा करते हैं कि भारत बच्चों और कामगारों को खरीद-फरोख्त, शोषण और दुर्व्यवहार से सुरक्षित रखनेवाले कानूनों को लागू करके अपने नागरिकों के प्रति न्यायसम्मत व्यवहार सुनिश्चित करने की दिशा में काम करता रहेगा। अपने कानूनों को लागू करके, अपने नागरिकों को शिक्षित करके और अपनी अर्थव्यवस्था को खोलकर भारत एक बढ़ती अर्थव्यवस्था की समृद्धि और अवसरों को अपनी जनसंख्या के सभी हिस्सों तक पहुंचाना सुनिश्चित कर सकता है।

वैश्विक बाजारों को खोलने के लिए संसार को भारत का नेतृत्व चाहिए। विश्व व्यापार संगठन का

विश्व व्यापार पर अमेरिका-भारत वक्तव्य

भारत और अमेरिका इस बात पर सहमत हैं कि विश्वव्यापी आर्थिक बढ़ोतरी, विकास, स्वतंत्रता और समृद्धि के लिए व्यापार आवश्यक है। हम विश्व व्यापार संगठन के दोहा विकास एजेंडा (डीडीए) को 2006 के अंत से पहले पूर्ण करने के लक्ष्य में पूरी तरह साथ हैं और इसके लक्ष्य के लिए मिलकर काम करने पर सहमत हैं। हमारे विचार-विमर्श में हम इस बात पर सहमत हुए कि इस काम को महत्वाकांक्षा, दृढ़ निश्चय, योगदान करने की तत्परता, विश्व व्यापार में हमारी भूमिका के अनुरूप और विकास के आयाम को ध्यान में रखते हुए पूरा करेंगे। व्यापार के नियमों की प्रणाली को मजबूत बनाया जाना चाहिए। दोनों ही महान लोकतंत्रों ने इसके लिए बड़ा योगदान किया है इस वैश्विक कार्य के लिए हम अपनी प्रतिबद्धता फिर जाहिर करते हैं और सभी प्रमुख भागीदारों को अपने नेतृत्व को प्रदर्शित करने के लिए आमंत्रित करते हैं। यदि हमें व्यापार के जरिये विकास को बढ़ावा देने के लक्ष्य को पाना है तो हम इस बात पर सहमत हैं कि सफल दोहा दौर वार्ता के सभी पहलुओं में प्रगति पर निर्भर है।

हम पहले के तय लक्ष्यों के अनुरूप दोहा विकास एजेंडे के नतीजों के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसमें कृषि (घरेलू समर्थन, निर्यात प्रतिस्पर्धा, और बाजार पहुंच) के तीनों मसलों पर बातचीत, मैनुफैक्चरिंग और सेवा क्षेत्र में बाजार के अवसरों पर अहम प्रगति, और सेवा क्षेत्र में पारदर्शिता और नियमन पद्धति समेत उपयुक्त मुद्दे शामिल हैं। हम विश्वास करते हैं कि हमें व्यापार को बढ़ावा देने वाले उन नियमों को मजबूत बनाना चाहिए जहां हमने संयुक्त रूप से प्रस्ताव दिए हैं। इन सभी क्षेत्रों में काम साथ-साथ चलना चाहिए।

हम वर्ष 2006 की पहली छमाही में महत्वाकांक्षी एजेंडे पर अमल के लिए सहमत हैं जो हांगकांग में मंत्रीस्तरीय बैठक में कृषि, मैन्युफैक्चरिंग, सेवा और अन्य मुद्दों पर तय अहम लक्ष्यों के अनुरूप है। हम बातचीत को 2006 के अंत तक पूर्ण करने के लिए भी दबाव बनाना जारी रखेंगे।

हम सुधारों को बढ़ावा देने, विकासशील देशों की चिंताओं पर गौर करने और संपूर्ण विश्व के लिए विकास के अवसर पैदा करने के लिए काम करना जारी रखेंगे। हम भविष्य की व्यापार व्यवस्था बना रहे हैं जहां लगातार उदारीकरण और सुधारों के चलते सभी लोगों की जिंदगी के स्तर में सुधार आए, विशेषकर विकासशील देशों के करोड़ों लोगों के जीवन में। सफल दोहा दौर के लिए काम करने के साथ-साथ हम अपने द्विपक्षीय व्यापार संबंधों को मजबूत और गहरे बनाने की प्रतिबद्धता जाहिर करते हैं। □

नई दिल्ली में 1 मार्च को व्यापार प्रतिनिधि रॉब पोर्टमैन वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री कमलनाथ से हाथ मिलाते हुए।

राजेश कुमार सिंह © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

दोहा व्यापार वार्ता दौर करोड़ों लोगों को गरीबी से निकालने और दोनों देशों में आर्थिक वृद्धि को बढ़ाने का सबसे बड़ा अवसर उपलब्ध करवा रहा है। अमेरिका सेवाओं, उत्पादन और कृषि पर एक महत्वाकांक्षी समझौते को संभव बनाने का प्रयास करता रहा है। इस वर्ष के अंत तक दोहा दौर को पूरा करना प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का और मेरा साझा लक्ष्य है और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हम मिलकर काम करेगें। दोहा दौर को पूरा करके हम एक ऐसा संसार बनाने में मदद करेंगे जो स्वतंत्रता से जीता है, आजादी से व्यापार करता है और समृद्धि की ओर अग्रसर है, और अमेरिका और भारत इसकी अगुवाई करेंगे।

एक साथ आगे बढ़ते हुए अमेरिका और भारत बाकी वैश्विक चुनौतियों का सामना कर सकते हैं जिनमें सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है ऊर्जा। अमेरिका की ही तरह भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था भी अधिक मात्रा में बिजली की मांग करती है। और इस जरूरत को पूरा करने का सबसे साफसुथरा और विश्वस्त उपाय है असैनिक नाभिकीय ऊर्जा। पिछली गर्मियों में वाशिंगटन में अमेरिका और भारत में असैनिक नाभिकीय प्रौद्योगिकी में भागीदारी और भारत के असैनिक नाभिकीय कार्यक्रमों को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की निगरानी में लाने पर सहमति बनी। इस हफ्ते हमारी बैठकों में प्रधानमंत्री सिंह और मैं इस ऐतिहासिक पहल को कार्यान्वित करने की एक योजना पर सहमत हुए। हमारी सहमति हम दोनों देशों की सुरक्षा और अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाएगी।

सबसे उन्नत प्रौद्योगिकी और अंतर्राष्ट्रीय मानकों को भारत के असैनिक नाभिकीय कार्यक्रम पर लागू करके हम सुरक्षा को बढ़ाएंगे और आणविक प्रसार के खतरे को कम करेंगे। और अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति में भारत की मदद करके हम भारत और अमेरिका और संसारभर में जीवाश्म ईंधनों के उपभोक्ताओं के लिए कीमतों पर दबाव कम करवा सकेंगे। हम हमारे पर्यावरण के बढ़िया संरक्षक बनने में भारत की मदद करेंगे और हमारे महान देशों के बीच विश्वास के बंधनों को मजबूत बनाएंगे।

अमेरिका और भारत कृषि में भी निकट सहयोग कर रहे हैं। 1960 के दशक में अमेरिका ने भारत की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसकी सहायता की, तब नॉर्मन बॉरलॉग जैसे अग्रणी अमेरिकी वैज्ञानिक ने भारतीय किसानों के साथ कृषि प्रौद्योगिकी में भागीदारी की। कड़ी मेहनत करके बीती आधी सदी में आप लोगों ने खाद्य उत्पादन लगभग तिगुना कर लिया है। इस प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री सिंह और मैं एक नई कृषि ज्ञान पहल की शुरूआत कर रहे हैं। यह पहल भारतीय और अमेरिकी वैज्ञानिकों के बीच आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने और खेती की प्रौद्योगिकी को सुधारने के लिए संयुक्त शोध को बढ़ावा देने के लिए 10 करोड़ डॉलर का निवेश करेगी। साथ-साथ काम करते हुए अमेरिका और भारत फसलें उगाने और उन्हें बाजार में पंहुचाने के बेहतर तरीके विकसित कर पाएंगे और एक दूसरी हरित क्रांति के पुरोधा बनेंगे।

अमेरिका और भारत अन्य कई क्षेत्रों में सहयोग के लिए एक ऐतिहासिक योजना में जुटे हैं। हम शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के क्षेत्रों में सुधार के लिए मिलजुल कर काम कर रहे हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में भी एक-दूसरे से सहयोग कर रहे हैं। भारतीय और अमेरिकी वैज्ञानिकों के संबंधों को बढ़ावा देने के लिए हम तीन करोड़ डॉलर की लागत से एक नए विज्ञान और प्रौद्योगिकी आयोग की स्थापना कर रहे

राष्ट्रपति बुश ने संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की अध्यक्ष सोनिया गांधी (ऊपर) और लोकसभा में विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी (बाएं) से 2 मार्च को मौर्य शेराटन होटल में मुलाकात की। मुलाकात स्थल को स्पैन पत्रिका के कला निदेशक हेमंत भटनागर द्वारा डिजाइन किए गए पोस्टरों से सजाया गया था।

व्हाइट हाउस फोटो/ एरिक ड्रेपर

नई दिल्ली में 2 मार्च को राष्ट्रपति बुश, राजदूत डेविड सी. मलफोर्ड और विदेश मंत्री कोंडोलीजा राइस धार्मिक नेताओं से विचार-विमर्श करते हुए। राष्ट्रपति ने कहा कि भारत और अमेरिका दोनों ही धार्मिक बहुलवाद और कानून के शासन का आदर करते हैं। उन्होंने भारत की एक ऐसे लोकतंत्र के रूप में सहारना की ''जहां विभिन्न धर्मों के लोग शांति और सद्भाव के साथ एकसाथ रह रहे हैं।''

हैं जो जैव प्रोद्योगिकी जैसे संभावनाशील क्षेत्रों में संयुक्त शोध के लिए आर्थिक सहयोग देगा।

हम भारत में बर्डफ्लू के खतरे का सामना करके, मलेरिया और टी.बी. का प्रसार कम करके और पोलियो का सफाया करके स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार लाने का प्रयास कर रहे हैं। हम दोनों देशों के सामने एचआइवी/एड्स की वैश्विक चुनौती भी है। भारत को इस चुनौती का सामना सीधे, खुलकर और समाज के सभी स्तरों पर करना चाहिए। और इस भयानक रोग के प्रवाह को पीछे मोड़ने में अमेरिका आपका साथी होगा।

हमारी साझेदारी को लेकर अमेरिका और भारत के महत्वाकांक्षी लक्ष्य हैं। इस संसार में हमें अभूतपूर्व अवसर मिल रहे हैं। हम आत्मविश्वास के साथ भविष्य की ओर देख सकते हैं क्योंकि हमारे संबंध जितने बढ़िया आज हैं, उतने कभी नहीं रहे। अमेरिका और भारत वैश्विक नेता हैं और अच्छे मित्र हैं, और जब हम मिलजुलकर काम करेंगे तो हमारी उपलब्धियों की कोई सीमा नहीं रहेगी।

हमारा दूसरा महान उद्देश्य है आतंक से लड़कर और संसारभर में स्वतंत्रता का प्रसार करके हमारे युग की धमकियों का सामना करना। हम दोनों ही देश अपनी भूमि पर आतंक की पीड़ा से परिचित हैं। 11 सितंबर 2001 को मेरे देश में करीब 3000 निर्दोष लोग मार डाले गए, इनमें से 30 से अधिक लोग भारत में जन्मे थे। करीब तीन महीने पहले (जैसा भाषण में कहा गया) आतंकवादियों ने यहीं दिल्ली में संसद पर आक्रमण किया, यह भारतीय लोकतंत्र के हृदय पर चोट थी।

हम दोनों देशों के लोगों ने मुक्त समाजों पर आतंकवादी आक्रमणों के कारण समझने का प्रयास किया। कुछ चीजें समझ आ रही हैं। आतंकवादी एक ऐसी हिंसक विचारधारा के अनुयायी हैं जो ईसाइयों, हिंदुओं, सिखों, यहूदियों और उन असंख्य मुसलमानों की हत्या की मांग करती है जो उनके कट्टरपंथी विचारों से सहमत नहीं हैं। आतंकवादियों का लक्ष्य एक ऐसी घृणित दृष्टि थोपना है जिसमें तमाम राजनीतिक और धार्मिक स्वतंत्रता की मनाही है। इन आतंकवादियों में बड़े देशों को सीधे चुनौती दे पाने की सैन्य शक्ति नहीं है, इसलिए भय के हथियार का उपयोग करते हैं। जब आतंकवादी न्यूयॉर्क में निर्दोष दफ्तर जाने वालों को मार डालते हैं, या दिल्ली के बाजार में खरीददारी करने वालों को मार देते हैं या लंदन में रेलयात्रियों को उड़ा देते हैं तो वे आशा करते हैं कि ये भयावह घटनाएं हमारी संकल्प शक्ति को तोड़ेंगी। वे लोकतंत्रों को निशाना बनाते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि हम कमजोर हैं और डर कर कदम पीछे हटा लेंगे। आतंकवादी हमारे देशों को लेकर गलतफहमी में हैं। अमेरिका और भारत अपनी स्वतंत्रता से प्रेम करते हैं और उसे बनाए रखने के लिए लड़ेंगे। अमेरिकी कांग्रेस को संबोधित करते हुए आपके प्रधानमंत्री ने कहा: ''हमें आतंकवाद से, जहां भी वह मौजूद है, लड़ना होगा। क्योंकि आतंकवाद कहीं भी हो वह सभी जगह लोकतंत्र के लिए खतरा है।'' वह ठीक कहते हैं। और

अमेरिका-भारत संयुक्त वक्तव्य

आपसी सहयोग

लोकतंत्र को मजबूत करने और अंतर्राष्ट्रीय चुनौतियों का सामना करने के लिए

- सितंबर 2005 में संयुक्त रूप से अपने द्वारा (राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री) शुरू किए गए संयुक्त राष्ट्र लोकतंत्र फंड के उद्देश्यों को याद करते हुए दोनों देशों ने तीसरी दुनिया के देशों को उनकी क्षमता बढ़ाने, प्रशिक्षण तथा आदान-प्रदान के कार्यक्रमों के लिए अनुभव तथा विशेषज्ञता का सहयोग देने का निश्चय किया जो अपनी लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती के लिए इस प्रकार की सहायता का आग्रह करेंगे।
- बुडापेस्ट स्थित अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र केंद्र (आई.सी.डी.टी.) साथ सहयोग की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए उसके सरकारी सलाहकार बोर्ड में एक प्रतिनिधि नामित करने के अमेरिका व भारत के निर्णय का स्वागत किया गया।
- सितंबर 2005 में स्थापित सूचना केंद्रों तथा अप्रत्यक्ष समन्वय को और अधिक मजबूत करने के लिए सहमति व्यक्त की गई और इन सेवाओं का लाभ उठाने के लिए व्यावहारिक कार्यक्रम के विकास हेतु शीघ्र ही द्विपक्षीय बैठक बुलाने का निर्णय लिया गया।
- वैश्विक स्तर पर एच आई वी/एड्स की कारगर रोकथाम के लिए यूएसएफडीए की औषधि स्वीकृति प्रक्रियाओं पर संतोष व्यक्त किया गया और एचआईवी/एड्स की रोकथाम के लिए भारत-अमेरिका कार्पोरेट फंड की स्थापना सहित कार्पोरेट स्तर पर और अधिक सहभागिता का निश्चय किया गया।
- चिकित्सा अनुसंधान, भारत में खाद्य एवं औषधि अधिनियम की तकनीकी क्षमता बढ़ाने, बर्ड-फ्लू से संबंधित सरोकार के साथ ही निजी क्षेत्र के सहयोग, क्षेत्रीय स्तर पर संचार की रणनीतियों के विकास और स्थानीय पाबंदियों तथा कार्रवाई में द्विपक्षीय प्रयासों को बढ़ाना तथा सहयोग को जारी रखना। राष्ट्रपति ने 2007 में बर्ड फ्लू की वैश्विक महामारी पर भारत की अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता के प्रस्ताव का स्वागत किया।
- वन्य जीव तस्करी निरोधक सम्मेलन में भारत की सदस्यता का स्वागत। इस भागीदारी से वन्यजीवों तथा उनके अंगों के अवैध व्यापार के खिलाफ कार्रवाई में सहयोग। हम पार्कों के प्रबंधन तथा इको-पर्यटन के जरिए वन्यजीव संरक्षण कार्य को सुदृढ़ करने के अवसर का भी स्वागत करते हैं। □

इसलिए अमेरिका और भारत आतंक के विरूद्ध युद्ध में सहयोगी हैं।

11 सितंबर के आक्रमण के बाद मलक्का जलडमरूमध्य में तैनात अमेरिकी जहाजों की जगह लेकर भारतीय नौसेना ने ऑपरेशन एंड्योरिंग फ्रीडम को जरूरी सहयोग दिया, हम भारतीय नौसेना को धन्यवाद देते हैं। आज हमारे देश जैव आतंकवाद, हवाईअड्डों की सुरक्षा और साइबर सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निकट सहयोगी हैं। हमारा सैन्य सहयोग पहले से कहीं मजबूत है। अमेरिका और भारत इस युद्ध में एकसाथ हैं, और हम मिलकर इस युद्ध को जीतेंगे।

दीर्घकाल में अमेरिका और भारत समझते हैं कि आतंक के विरूद्ध युद्ध जीतने के लिए आतंक को पैदा करनेवाली स्थितियों को बदलना जरूरी है। इतिहास हमें राह दिखता है। पूर्व से पश्चिम तक हमने देखा है कि एक ही ताकत इतनी प्रबल है कि नफरत की जगह आशा फैला सके, और वह ताकत मानवीय स्वतंत्रता है। स्वतंत्र समाज आतंकवादियों को शरण नहीं देते, न वे वैमनस्य को पैदा करते हैं। स्वतंत्र समाज अपने नागरिकों और पड़ोसियों के अधिकारों का सम्मान करते हैं। स्वतंत्र समाज शांतिपूर्ण समाज हैं।

जैसा कि एक बार आपके पहले प्रधानमंत्री नेहरूजी ने कहा था: ''बुराई दिन के उजाले में नहीं, अंधेरों में ज्यादा पनपती है।'' भारत और अमेरिका मिलकर हमारी धरती के सबसे अंधेरे कोनों तक स्वतंत्रता का उजाला ले जाएंगे।

करीब 60 साल हुए जब भारत ने एक स्वतंत्र देश बनने के लिए एक साहसिक लड़ाई को अंजाम दिया। स्वतंत्रता के लिए आपके संघर्ष में अमेरिकी जन आपके साथ थे। राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट भारत की स्वतंत्रता का समर्थन करने वाले पहले विश्व नेताओं में थे। बाद के दशकों में भारत ने एक मजबूत लोकतंत्र बनाया है जिसमें विभिन्न धर्मों के अनुयायी स्वतंत्रता और शांति से जीते हैं।

भारत में हिंदुओं का बहुमत है और यहीं संसार के सबसे बड़े मुस्लिम समुदायों में से एक रहता है। भारत करोड़ों सिखों, ईसाइयों और अन्य धार्मिक समुदायों का भी घर है। सभी इस महान देश के मंदिरों, मस्जिदों और गिरजाघरों में उन्मुक्त भाव से प्रार्थना करते हैं। विभिन्न पृष्ठभूमियों के भारतीय एकसाथ पाठशालाओं में जाते हैं, एकसाथ काम करते हैं और एकसाथ मिलकर आपके राष्ट्र को शासित करते हैं। एक बहुजातीय, बहुधार्मिक लोकतंत्र के तौर पर भारत संसार को दिखा रहा है कि कानून का राज्य स्थापित करना न्याय और सहिष्णुता सुनिश्चित करने का सबसे बढ़िया उपाय है।

वैमनस्य का मुकाबला करने का सबसे अच्छा तरीका है शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति की अनुमति देना। मानवीय अस्मिता को सम्मान देने का सबसे अच्छा तरीका है मानवधिकारों की सुरक्षा। नस्ल, धर्म या संस्कृति के आधार पर विखंडित हर राष्ट्र के लिए भारत आशा की राह सुझाता है: अगर लक्ष्य न्याय है तो लोकतंत्र उसकी राह है।

भारत के लोकतंत्र के उदाहरण से विश्व को फायदा मिला है, और अब दुनिया को स्वतंत्रता के मकसद के लिए भारत के नेतृत्व की जरूरत है। विश्व ताकत के तौर पर भारत का यह ऐतिहासिक कर्त्तव्य है कि वह दुनिया में लोकतंत्र को समर्थन दे। मैं अभी अफगानिस्तान गया था। वहां दुनिया देख रही है कि भारत के नेतृत्व में क्या हो सकता है। तालिबान के सत्ता से बाहर होने के बाद भारत ने 56 करोड़ 50 लाख डॉलर की मदद देकर अफगानिस्तान के लोगों को अपने पैरों पर खड़े होने में मदद की है। आपके देश में प्रशिक्षित राष्ट्रीय असेम्बली कर्मचारी हैं और असेम्बली के निर्वाचित नेताओं के लिए इसी तरह का कार्यक्रम विकसित किया जा रहा है। आपने अभी घोषणा की है कि आप अफगानिसतान के राष्ट्रीय असेम्बली भवन को पूरा करने के लिए पांच करोड़ डॉलर की अतिरिक्त मदद देंगे। इतने सालों तक कष्ट झेलने के बाद अफगानिस्तान के लोग आशा, स्वतंत्रता के भविष्य को हासिल कर रहे हैं। वे हमेशा याद रखेंगे कि जरूरत के समय भारत उनके साथ खड़ा था।

भारत वैश्विक लोकतंत्र पहल का सह-संस्थापक बन कर लोकतंत्र के लक्ष्य की दिशा में भी नेतृत्व दिखा रहा है। संसारभर में लोकतंत्र और विकास को बढ़ावा देने की पहल में पहले दो योगदान करने वाले होने का प्रधानमंत्री सिंह और मुझे गर्व है। जिन देशों में लोकतंत्र उभर ही रहा है, उनके साथ सीधे काम करके भारत अब अपनी प्रतिबद्धता की दिशा में अग्रसर हो सकता है। आज जब संसार में युवा

आपसी सहयोग

वैश्विक सुरक्षा के लिए

- आतंकवाद का सामना करने के लिए दोनों देशों के बीच बढ़ते सहयोग पर विचार किया गया और इस बात पर बल दिया गया कि आतंकवाद वैश्विक समस्या है और विश्व में हर जगह इसका सामना करके इसे खत्म किया जाना चाहिए।
- अमेरिका और भारत के बीच 28 जून 2005 को किए गए प्रतिरक्षा समझौते के बाद प्रतिरक्षा के क्षेत्र में बढ़े सहयोग का स्वागत किया गया। संयुक्त सफल अभ्यास, प्रतिरक्षा सहयोग का विस्तार तथा जानकारी का आदान-प्रदान, और आपसी प्रयास से प्रौद्योगिकी विकास की दिशा में अधिक सुअवसर तथा सुरक्षा व मानवीय मुद्दों पर अधिक ध्यान दिया जाना इस सहयोग का प्रमाण है।
- खुले व्यापार के संरक्षण तथा समुद्री परिवहन सुरक्षा पर पूर्व वचनबद्धता की पुन: पुष्टि की गई और समुद्री क्षेत्र की सुरक्षा बढ़ाने के लिए समुद्री सहयोग की रूपरेखा बनाने पर सहमति व्यक्त की गई जिसके तहत समुद्र में तस्करी तथा अन्य पार-राष्ट्रीय अपराधों को रोकना, जांच तथा बचाव की कार्रवाई, समुद्री प्रदूषण को रोकना, प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति में मदद करना, आपातकालीन चुनौतियों का सामना करना और आपूर्ति तथा सेवा सहायता सहित सहयोग की क्षमताओं को बढ़ाना शामिल है। दोनों देश यथाशीघ्र आपूर्ति एवं सेवा सहायता समझौते (लॉजिस्टिक्स सपोर्ट एग्रीमेंट) को अंतिम रूप देने की कार्रवाई कर रहे हैं।
- कंटेनर सुरक्षा प्रयास में भारत के शामिल होने की इच्छा का स्वागत किया गया जिसका लक्ष्य वैश्विक स्तर पर समुद्री व्यापार तथा इसके आधारभूत ढांचे को अधिक सुरक्षित बनाना और माल ढोने के कंटेनरों में महाविनाश के हथियारों के छिपाए जाने के खतरे को कम करना है।
- महाविनाश के हथियारों के विस्तार को रोकने के अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों में सहयोग देने की वचनबद्धता को दोहराया गया।
- जुलाई 2005 में किए गए आपदा राहत प्रयास समझौते पर विचार करते हुए महत्वपूर्ण आपदा प्रबंध सहयोग और आपदा की परिस्थितियों में बेहतर क्षमता के साथ मदद पर बल दिया गया।
- साइबर सुरक्षा की क्षमता बढ़ाने तथा इलेक्ट्रॉनिक अंतर्निर्भरता में वृद्धि की बात को स्वीकार किया गया जिसमें इलेक्ट्रॉनिक लेन-देन तथा आधारभूत ढांचे को साइबर अपराधों, आतंकवाद तथा अन्य द्वेषपूर्ण खतरों से बचाना शामिल है। □

चार्ल्स धारपाक © ए.पी./डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू.

नई दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में 2 मार्च को औपचारिक स्वागत के दौरान राष्ट्रपति बुश गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण करते हुए।

लोकतंत्र आकार ले रहे हैं, भारत उन सार्वभौम स्वतंत्रताओं को बनाए रखते हुए जो वास्तविक लोकतंत्रों की आधार है, एक राष्ट्र की अनूठी संस्कृति और इतिहास को संरक्षित रखने का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत करता है ।

स्वतंत्रता के लिए व्याकुल संसार को भारत का नेतृत्व चाहिए। उत्तरी कोरिया से लेकर बर्मा, सीरिया से जिंबाब्वे और क्यूबा तक के स्त्री-पुरूष अपनी स्वतंत्रता के लिए उत्कंठित हैं। ईरान में एक गर्वीले राष्ट्र को एक छोटे से पुरोहित वर्ग ने बंधक बना रखा है जो मूलभूत स्वतंत्रताओं का हनन करता है, आतंकवाद को प्रायोजित करता है और नाभिकीय हथियारों के निर्माण में जुटा है। हमारे राष्ट्रों को यह बहाना नहीं बनाना चाहिए कि इन देशों के लोग गुलाम बनकर रहना पसंद करते हैं। हमें सुधारकों और असंतुष्टों और नागरिक संगठनों का साथ देते हुए उस घड़ी को जल्दी लाने का प्रयास करना चाहिए जब इन राष्ट्रों के लोग अपने भविष्य को नियत कर पाएंगे, अपने नेता चुन पाएंगे। भले ही इन लोगों को रातोंरात आजादी न मिले लेकिन इतिहास उनके साथ है।

आज रात मैं भारत से पाकिस्तान के लिए निकल पड़ूंगा जो अमेरिका का एक और महत्वपूर्ण भागीदार और दोस्त है। एक दौर में पाकिस्तान से अमेरिका के अच्छे संबंध भारत के लिए चिंता का कारण होते थे। वह दौर बीत चुका है। पाकिस्तान से अमेरिका के घनिष्ठ संबंध भारत के हित में हैं और भारत से अमेरिका के घनिष्ठ संबंध पाकिस्तान के हित में हैं। इस्लामाबाद की अपनी यात्रा के दौरान मैं राष्ट्रपति मुशर्रफ से आतंक से युद्ध में पाकिस्तान के परमआवश्यक सहयोग और चरमपंथी इस्लाम के प्रति आकर्षण में कमी लाने के लिए आर्थिक और राजनीतिक विकास को पोषित करने के हमारे प्रयासों के बारे में बात करूंगा। मैं मानता हूं कि एक समृद्ध, लोकतांत्रिक पाकिस्तान अमेरिका का एक घनिष्ठ सहयोगी, भारत का शांतिपूर्ण पड़ोसी और अरब जगत में स्वतंत्रता और संयम के पक्ष में एक ताकत होगा।

स्वतंत्रता की प्रगति हमारे युग की एक महान गाथा है।1945 में भारत के स्वतंत्रता पाने से कुल दो साल पहले पृथ्वी पर दो दर्जन से भी कम लोकतंत्र थे। आज सौ से अधिक लोकतंत्र हैं और एशिया से लेकर अफ्रीका तक, पूर्वी यूरोप से लैटिन अमेरिका तक लोकतंत्र विकसित हो रहे हैं, फलफूल रहे हैं। संसार देख सकता है कि स्वतंत्रता केवल अमेरिकी या भारतीय मूल्य ही नहीं है। स्वतंत्रता एक सार्वभौमिक मूल्य है, और यह इसलिए है क्योंकि स्वतंत्रता का स्रोत एक ऐसी शक्ति है जो हमारी शक्तियों से अधिक महान है। महात्मा गांधी ने कहा था, ''स्वतंत्रता परमेश्वर का उपहार है...और हर राष्ट्र का अधिकार।'' इक्कीसवीं सदी में आगे बढ़ते हुए हमें इन शब्दों को याद रखना चाहिए।

कुछ दिन बाद मैं अमेरिका लौट जाऊंगा, यहां भारत में बिताए गए समय को मैं कभी नहीं भूलूंगा। आपके लोकतंत्र को अपना दोस्त कहते हुए अमेरिका गौरवान्वित अनुभव करता है। हम आपके भविष्य को लेकर आशावान हैं। महान भारतीय कवि टैगोर ने कभी लिखा था, ''एकमात्र इतिहास है मनुष्य का इतिहास।'' इन शब्दों में आस्था रखते हुए अमेरिका और भारत आगे कदम बढ़ा रहे हैं। मनुष्य का एक ही इतिहास है- और वह स्वतंत्रता की ओर पहुंचता है।

भारत पर ईश्वर का आशीर्वाद बना रहे। ★

आपसी सहयोग

नई खोज तथा ज्ञान अर्थव्यवस्था के लिए

- ज्ञान के क्षेत्र में भागीदारी के महत्व को अनुभव करते हुए एक द्वि-राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आयोग की स्थापना की घोषणा की गई जिसके लिए अमेरिका और भारत मिल कर धन की व्यवस्था करेंगे। इसके तहत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग और औद्योगिक अनुसंधान व विकास के लिए भागीदारी की जाएगी।
- सक्रिय बौद्धिक संपदा अधिकार का वातावरण बनाकर अमेरिका और भारत के आपसी प्रयास से नूतन प्रयोगों, रचनात्मकता तथा प्रौद्योगिकीय प्रगति को प्रोत्साहित करने के लिए सहमति व्यक्त की गई। बौद्धिक संपदा अधिकारों के क्षेत्र में सहयोग, जिसमें क्षमता वृद्धि, मानव संसाधन विकास तथा जन-जागरण कार्यक्रम शामिल हैं।
- अंतरिक्ष अनुसंधान, उपग्रह मार्ग निर्देशन तथा भूविज्ञान सहित असैनिक अंतरिक्ष के क्षेत्र में और अधिक सहयोग के लिए सहमति व्यक्त की गई। अमेरिका और भारत ने उन समझौतों के आधार पर आगे बढ़ने का निश्चय किया जिनके अंतर्गत अमेरिकी उपग्रहों तथा अमेरिकी सामग्री ले जाने वाले भारतीय प्रक्षेपण-यानों के प्रक्षेपण को स्वीकृति दी जाएगी। इससे दोनों देशों के बीच अंतरिक्ष संबंधी व्यावसायिक सहयोग बढ़ सकेगा।
- भारत के चंद्र अभियान 'चंद्रयान-1' में दो अमेरिकी उपकरणों को शामिल किए जाने का स्वागत किया गया। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने स्वीकार किया कि इसरो और नासा के बीच समझौता इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।
- अमेरिकी वाणिज्य विभाग की उस योजना का स्वागत किया गया जिसके तहत नागरिक गतिविधियों में लगे उपभोक्ताओं को उन वस्तुओं के निर्यात लाइसेंस से छूट दी जाएगी जिनके लिए अन्यथा निर्यात लाइसेंस